रामचरितमानस में संचारः एक अध्ययन

डॉ मुकेश कुमार

17

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा में रामचरितमानस एक अमूल्य ग्रथ है, जो न केवल भारतीय लोकजीवन की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है बल्कि संचारशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी संचार के विभिन्न पक्षों को उजागर करता है। 'संचार का तात्पर्य सूचना, विचारों और अभिवृतियों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक संप्रेषित' करना है। इसके माध्यम से लोग आपस में विचार, आचरण, ज्ञान और भावनाओं का विनिमय या किसी और तक स्थानांतरित करते हैं। रामचरितमानस में संचार प्रक्रिया अर्थात किसी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति अथवा किसी एक व्यक्ति से कई व्यक्तियों को कुछ सार्थक चिन्हों, संकेतों या प्रतीकों के संप्रेषण से सूचना, जानकारी, ज्ञान और मनोभावों का आदानप्रदान करने के कई उदाहरण मिले हैं। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस में निहित संचार के विभिन्न प्रकारों यथा अंतरा वैयक्तिक, अंतर वैयक्तिक, सांकेतिक संचार, समूह संचार और जनसंचार, वैयक्तिक और अमौखिक संचार का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः *रामचरितमानस, अंतरावैयक्तिक संचार, अंतरवैयक्तिक संचार, समूह संचार, जनसंचार, सांकेतिक संचार, मौखिक संचार।*

प्रस्तावना

रामचरितमानस का स्थान हिन्दी साहित्य में ही नहीं, जगत के साहित्य में निराला है। गोस्वामी तुलसीदास ने ''रामचरितमानस'' के रूप में सार्वकालिक महाकाव्य की रचना की। रामचरितमानस महाकाव्य की लोकप्रियता ने ही राम को लोकनायक के रूप में स्थापित किया। तुलसीदास ने रामचरितमानस में लोकधर्म, लोक चिंता, लोक मानस, लोक रक्षा, लोक मंगल की भावना को संचारित किया। तुलसी दास ने रामचरितमानस में संचार के विभिन्न प्रकारों के माध्यम से लोकनायक राम के संघर्ष को साधारण जनता के संघर्ष के रूप में चित्रित किया है। कविवर तुलसीदास के महाकाव्य रामचरितमानस में नैतिक मूल्यों का संघर्ष साधारणजन का संघर्ष प्रतीत होता है, जो संचार के अमौखिक–मौखिक माध्यम से इसमें परिलक्षित

डॉ मुकेश कुमार

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, मौलाना मजहरुल हक अरबी व फारसी विश्वविद्यालय, पटना, बिहार (भारत)

Publisher: Anu Books, DOI: https://doi.org/10.31995/Book.AB356-A26. Ch.17
Book Name : भारतीय ज्ञान परम्परा और सामाजिक विज्ञान
Plagiarism Report: 02%

होता है। तुलसीदास के रामचरितमानस में समाजधर्म से लोकधर्म, लोकधर्म से विश्वधर्म शुद्ध और पूर्ण रूप से दिखाई देता है। तुलसीदास की रामकथा तुलसी के युग की कथा है (त्रिपाठी), रामचरितमानस भक्तिकाल की ऐसी रचना है कि जिसकी 'रामकथा मात्र में मानव हृदय को द्रवित करने का जो सामर्थ है' (बुल्के)। 'यह रचना लोककल्याण की दृष्टि से इतनी अधिक सफल है कि भारतीय साहित्य के नक्षत्र लोक में रामचरितमानस चिरंतन काल तक ध्रुवतारा के समान अमर ज्योति निर्देशित करता रहा है' (लाल)।

वस्तुतः रामचरितमानस हिन्दी भाषी जनता के मन को अनुप्राणित और रसमग्न करने वाला काव्य रहा है। इस महाकाव्य में तुलसीदास ने रामकथा को संचारात्मक, काव्यात्मक कौशल के साथ उपस्थित किया है कि यह काव्य भक्ति और लोकमंगल की त्रिवेणी कही जा सकती है। इसमें संवाद योजना के द्वारा संचार के विभिन्न तत्वों की सांगोपांग उपलब्धता देखी जा सकती है। संचारशास्त्रीय दृष्टिकोण से रामचरितमानस साहित्यक और सांस्कृतिक आधारभूमि की मेरुदंड कही जा सकती है। तुलसीदास की रामचरितमानस भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक का अमूल्य ग्रंथ है, जिसमें भक्ति, नीति और सामाजिक चेतना का सशक्त समन्वय दिखाई देताा है। अवधी भाषा में रचित यह महाकाव्य राम के आदर्श जीवन के माध्यम से सत्य, करूणा, मर्यादा और कर्तव्य का संदेश देता है। रामचरितमानस न केवल भारतीय लोकजीवन की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि सांचारशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी संचार के विभिन्न पक्षों को उजागर करता है। रामचरितमानस लोकसंचारक साहित्य का एक प्रमुख उदाहरण माना जा सकता है।

संचारः संचार का आशय संप्रेषण की संपूर्ण प्रक्रिया से है, दूसरे शब्दों में स्त्रोत और प्रापक के बीच संप्रेषण को संचार कहा जा सकता है। मानवीय परिदृश्य में संचार और मानव की परस्परता से ही समाज का विकास होता रहा है। ''संचार के बिना मानव जीवन की कल्पना संभव नहीं है'' (फॉरे व आंद्रे) जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेश प्रेशित करने की प्रक्रिया है। संचारशास्त्री ओम प्रकाश सिंह के अनुसार ''संचार ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है, जो परस्पर सम्बद्ध और उद्धेश्यपूर्ण हैं (सिंह, 2018)। इसमें एक संचार सामान्य तौर पर एक सामाजिक प्रक्रिया है। संचार वह प्रक्रिया है, जिसमें स्त्रोत एवं प्रापक के मध्य सूचना का संप्रेषण होता है (रोगेर्स व फ्लोगेड)। संचार किसी उद्दीपक के प्रति किसी व्यक्ति की विवेकपूर्ण प्रतिक्रिया है। संचार की मानव समाज की संचालन प्रक्रिया को संभव बनाता है (लोयेड)। संचार का तात्पर्य सूचना विचारों और अभिवृतियों का एक व्यथ्ति से दूसरे व्यक्ति तक संप्रेषित करने की कला है। इसके माध्यम से लोग आपस में विचार, आचार ज्ञान और भावनाओं का विनिमय या किसी और तक स्थानांतरित करते हैं। लुईस ए.एलेन के अनुसार ''संचार उन सभी क्रियाओं का योग है जिनके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे के साथ समझदारी स्थापित करना चाहता है। संचार अर्थों का एक पुल है, इसमें कहने, सुनने और समझने की एक व्यवस्थित और नियमित प्रक्रिया

शामिल है''। लेक्सिकॉन यूनिवर्सल इनसाइक्लोपीडिया के अनुसार ''संचार का आशय विविध प्रकार के ऐसे व्यवहारों, प्रक्रियाओं एवं तकनीकों से है जिनके द्वारा सूचनाओं से अर्थ की उत्पत्ति और स्थानांतरण होता है''। इस प्रकार कहा जा सकता है कि किसी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति अथवा किसी एक व्यक्ति से कई व्यक्तियों को कुछ सार्थक चिन्हों, संकेतों या प्रतीकों के संप्रेषण से सूचना, जानकारी, ज्ञान या मनोभावों का आदान–प्रदान करना संचार है। वस्तुतः संचार एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संप्रेषण है जिसमें अनुभव, विचारों, संदेश, दृष्टिकोण, मत, सूचना, ज्ञान और अभिवृति का परस्पर मौखिक, लिखित या सांकेतिक आदान प्रदान किया जाता है। प्रोफेसर ओम प्रकाश सिंह के अनुसार ''संचार मानवीय समाज की संज्ञानात्मक प्रक्रिया है, जिसमें उद्धेश्यपूर्ण एवं सार्थक अनुभवों, व्यवहारों एवं आवश्यकताओं का परस्पर आदान–प्रदान किया जाता है। इसमें निश्चित लक्ष्य होता है, यह व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित और प्रभावित करता है। इसमें समता, भागीदारी की सूचना एक संप्रेषक एवं श्रोता के मध्य स्वतः विद्यमान रहती है'' (सिंह, 1993)।

संचार शब्द संस्कृत के चर धातु तथा सम उपसर्ग से मिलकर बना है। चर का अर्थ है चलना अथवा आगे बढ़ाना और सम उपसर्ग सम्यक आचरण का बोध कराता है, अतः सम्यक रूप से चलना या आगे बढ़ना संचार कहलाता है। जे.पाल. लीगंस का मानना है कि ''संचार एक प्रक्रिया है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति एक ऐसे रूप में विचारों, तथ्यों, अनुभवों और प्रभावों का विनिमय करते हैं, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति संदेश का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लेता है। यह संप्रेषक और संग्राहक के बीच किसी संदेश अथवा संदेशों की श्रृंखला को प्राप्त करने के लिए की गई सम्मिलित क्रिया है'' मिश्र (2003)। इस प्रकार कहा जा सकता है कि संचार एक अर्थगत प्रक्रिया है, जो चिन्हों और संकेतों पर आधारित है। भाषा पर आधारित होने के कारण संचार सांस्कृतिक प्रक्रिया भी है, क्योंकि भाषा मनुष्य की सांस्कृतिक परंपरा का अंग है। संचार एक सामाजिक प्रक्रिया भी है क्योंकि संचार ही वह प्रमुख साधन है जिससे मनुष्य समाज के साथ अंतर्क्रिया करता है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में संचार के सभी रूपों को भी सम्मिलित किया है। इसमें शाब्दिक संचार के अतिरिक्त अशब्दिक संचार, सांकेतिक संचार के साथ–साथ सभी प्रकार के संचार का प्रभावी प्रयोग किया है। मानवीय संचार के प्रकार को इस तरीके से समझा जा सकता है।

अंतरावैयक्तियक संचार : यह एक ऐसी संचार प्रक्रिया है जिसका संबंध मनुष्य के शरीर तथा उसे अंतःकरण से है। इसके अंतर्गत व्यक्ति का विचार, चिंतन आदि शामिल होता है जैसे– स्वयं के अनुभव, विचार, चिंतन, भावना स्मरण या उलझन आदि के आधार पर भूत, वर्तमान एवं भविष्य के संबंध में व्यक्ति, घटना, प्रभाव एवं परिणामों का स्वयं ही मूल्यांकन करना इसमें शामिल होता है, इसे 'आभ्यंतर संचार' भी कहा जाता है। ''यह मनुष्य का व्यक्तिगत चिंतन मनन है,

जिसमें मनुष्य स्वयं अपने से संचार करता है (राजगढ़िया)''। मनुष्य के मस्तिष्क में होने वाले संचार को इसमें रखा जा सकता है। संचारशास्त्री बार्कर के अनुसार ''अंतरावैयक्तिक संचार संपूर्ण व्यक्तित्व का स्वयं से भौतिक, भावनात्मक एवं सामाजिक कार्य है''। रामचरिमानस में यह संचार परिलक्षित होता है। जैसे –

''समाचार सब सुने निषादा। हदयं बिचार करई सविषादा''

(निशादराज ने सब समाचार सुना तो वह दुखी होकर हदय में विचार करने लगा)

अंतरवैयक्तियक संचार : यह एक ऐसी संचार प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत एक व्यक्ति या संप्रेषक द्वारा प्रेषित सूचना या संदेश को प्रापक या दूसरे व्यक्ति द्वारा ग्रहण किया जाता है। यह 'संचार मौखिक अथवा सांकेतिक रूप में हो सकता है' (वाटसन व ऐनी)। वस्तुतः अंतरवैयक्तियक संचार, दो व्यक्तियों का परस्पर संचार है। एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति से विचारों, मतों, भावनाओं आदि क आदान–प्रदान को इस संचार में शामिल किया जाता है, जिसमें आमने–सामने बैठकर संचार किया जाता है। यह दो व्यक्तियों के संपर्क से होने वाला संचार है, जिसमें उनके बीच किसी प्रकार की अंतः क्रिया का होना भी अनिवार्य है। यही कारण है कि इसमें किसी स्वर, संकेत, शब्द, संगीत, चित्र के द्वारा संचार हो सकता है। रामचरितमानस में शिव और पार्वती का संवाद भी इसी संचार के अंतर्गत आता है। जैसेः ''बोली सटी मनोहर बानी। भय संकोच प्रेम रस सानी''

(आखिर सतीजी भय, संकोच और प्रेमरस में सनी हुई मनोहर वाणी से बोली)

समूह संचार : मानव समाज में मनुष्य का व्यवहार विभिन्न समूहों के रूप में भी व्यक्त है। मुनष्य अपनी सामाजिक आवश्यकताओं के लिए समूहों का सदस्य बनता है। ओम प्रकाश सिंह के अनुसार ''समूह में होने वाली संचार प्रक्रिया को समूह संचार कहा जाता है। समूह लोगों का ऐसा निकाय या संगठन होता है, जिसका निश्चित उद्धेश्य होता है तथा लोग इसी हित या उद्धेश्य के कारण इकट्ठा होते हैं'' (सिंह)। ''समाज एक प्रकार से समूहों का संगठन है जो एक औपचारिक एवं संस्थाबद्ध संचार होता है जिसमें अंतर संबंधों की जटिलता होती है। समूह संचार तब होता है, जब व्यक्तियों का एक समूह आमने–सामने विचार–विमर्श, गोष्ठी, भाषण और सभा के द्वारा विचारों का आदान–प्रदान करे'' (राजगढ़िया)। रामचरितमानस के बालकांड के इस चौपाई से समूह संचार को समझा जा सकता है। जैसे – ''सुनहु सभासद सकल मुनिंदा। कही सुनी जिन्ह संकर निंदा''

(हे सभासदों और सब मुनीश्वरों, सुनो जिनलोगों ने यहाँ शिव की निंदा की है या सुनी है'')

जनसंचार : जनसंचार वह संचार है, जिसमें सूचना संप्रेषण विस्तृत क्षेत्र में बिखरे लोगों तक जनमाध्यमों द्वारा पहुँचती है। किसी यंत्र या जनमाध्यम के जरिये जब संदेश को एक बड़े मिश्रित जनसमूह तक भेजा जाए तो वह जनसंचार की श्रेणी में आता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कोई भी संचार, जो लोगों के महत्त्वपूर्ण रूप से व्यापक समूह तक पहुँचता हो, जनसंचार है। इस प्रकार कहा जा

सकता है कि जनसंचार ऐसी संस्थाओं एवं प्रतीकों का समुच्चय है, जिसमें तकनीकी उपकरणों का प्रयोग करके विषाल, बहुआयामी और विस्तृत क्षेत्र में फैले प्रापकों तक पहुँचाया जाता है। रामचरितमानस में आकाशवाणी प्रसंग में इस संचार को देखा जा सकता है। जैसे –

''चलत गगन भै गिरा सुहाई''

(चलते समय सुंदर आकाशवाणी हुई कि हे महेश)

''यह इतिहास सकल जग जानी''

(यह इतिहास सारा संसार जानता है)

अमौखिक संचार और आंगिक–कायिक संचार : संचार की पूरी प्रक्रिया में अमौखिक संचार और आंगिक–कायिक संचार की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। संचार विशेषज्ञों के अनुसार समाज में होने वाले कुल संचार का लगभग 50 प्रतिशत से भी ज्यादा भाग अमौखिक संचार होता है। भावनाओं के संप्रेषण में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इसमें शारीरिक संकेत, शारीरिक गति, वेशभूषा, स्पर्श, उच्चारण, हाव–भाव, इशारा, भाव–भंगिमा, मुद्रा शामिल हैं। इस संचार में बहुमाध्यम होता है जो निरंतर चलता रहता है। रामचरितमानस में इस संचार के कई प्रमाण देखे जा सकते हैं जैसे –

''संभु समय तेहि रामहि देखा। उपजा हियँ अति हरशु बिषेशा।।
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी। कुसमय जानि न कीन्हीं चिन्हारी।।

(श्री शिवजी ने उसी अवसर पर राम के देखे और उनके हदय में बहुत भारी आनंद उत्पन्न हुआ। उन शोभा के समुद्र को शिवजी ने नेत्र भरकर देखा, परंतु अवसर ठीक न जानकर परिचय नहीं किया।)

रामचरितमानस में संचार का अध्ययन :

रामचरितमानस में अंतरावैयक्तियक संचार : इस प्रकार के संचार में बालकांड के मंगलाचरण, गुरु वेदना, ब्राहमण–संत वंदना, नाम महिमा इत्यादि में देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त यह संचार निम्न संदर्भों में भी मिलता है, जैसे– चिंतामग्न, ध्यानस्थ, व्याकुल, प्रसन्ता का अनुभव करना, मानसिक वेदना, विचार करना, स्मरण करना, विस्मय, विषाद, दुःखी होना, क्रोध से तमतमाना जैसे प्रसंगों में देखा जा सकता है।

'संत सरल चित जगत हित जानि सुभाऊ सनेहु''

(संत सरलहदय और जगत के हितकारी होते हैं, उनके ऐसे स्वभाव और स्नेह को जानकर मैं विनय करता हूँ)

''हदयं बिचारत जात हर केही बिधि दरसनु होइ''

(शिवजी हदय में विचारते जा रहे थे कि भगवान के दर्शन मुझे किस प्रकार हों)

''जो सुमिरत सिधी होइ गन नायक करिबर बदन।

करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन।।''

(जिन्हें स्मरण करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं, जो गणों के स्वामी और सुंदर हाथी के मुखवाले हैं, वे ही बुद्धि के राशि और शुभ गुणों के धाम मुझपर कृपा करें।)

रामचरितमानस में अंतरवैयक्तियक संचारः इस प्रकार के संचार याग्वल्यक–भारद्वाज संवाद, शिव–पार्वती संवाद, दशरथ–कैकेयी संवाद, राम–कैकेयी संवाद, राम–दशरथ संवाद, कौशल्या–राम संवाद, राम–वाल्मीकि संवाद, लक्ष्मण–सुमित्रा संवाद, लक्ष्मण–निषाद संवाद, भरत–कौशल्या संवाद, कौशल्या–सुनयना संवाद, राम–भारत संवाद, नारद–राम संवाद, इंद्र–वृहस्पति संवाद, सुग्रीव–राम संवाद, हुनमान–विभीषण संवाद, सीता–त्रिजटा संवाद, राम–शबरी संवाद में देखा जा सकता है।

जैसे ''सुनहु उदार सहज रघुनायक। सुंदर अगम सुगम बार दायक''

(हे स्वाभाव से उदार रघुनाथजी, सुनिए, आप सुदर अगम और सुगम वर देने वाले हैं)

''सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए। बिपुल बिसद निगमागम गाए''

(हे पार्वती, सुनो! वेद–शास्त्रों ने श्री हरि के सुंदर, विस्तृत और निर्मल चरित्रों का गान किया है)

''सुनु सुग्रीव मारिहऊँ बालिहि एकहिं बान।
ब्रम्हा रूद्र सरनागत गएँ न उबारिहीं प्रान।।''

(हे सुग्रीव, सुनों मैं एक ही बाण से बालि को मार डालूँगा। ब्रम्हा और रूद्र की शरण में जाने पर भी उसके प्राण न बचेंगे।)

रामचरितमानस में समूह संचारः इस प्रकार के संचार की उपलब्धता सभी कांडों में परिलक्षित होती है जैसे – राम का लंका पर चढ़ाई करने से पूर्व अपने सहायोगियों से विचार विमर्श, सीता स्वयंवर के अवसर पर उपस्थित जनों से संवाद राम का अयोध्यावासियों के साथ संवाद वनवासियों द्वारा भरत की मंडली का सत्कार, इस संचार की श्रेणी में आते हैं।

उदाहरण के तौर पर इससे समझा जा सकता है–

''उमा–महेस विबाह बराती''

(श्री पार्वती और षिवजी के विवाह के बाराती)

''संतसभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल''

(संतो की सभा ही सब सुंदर मंगलों की जड़ अनुपम अयोध्या है)

''सुनी अनुकथन परस्पर होई''

(इस कथा को सुनकर पीछे जो आपस में चर्चा होती है)

रामचरितमानस में जनसंचार : रामचरितमानस में जनसंचार के कई प्रसंग मिलते हैं जैसे –

''माघ मकरगत रबि जब होई। तीरथपतिहिं आव सब कोई।।
देव दनुज किंनर नर श्रेनी। सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनीं।।''

(माघ में जब सूर्य मकर राशि पर जाते हैं तब सब लोग तीर्थराज प्रयाग को आते हैं। देवता, दैत्य, किन्नर और मनुष्यों के समूह सब आदरपूर्वक त्रिवेणी में स्नान करते हैं।)

''यह इतिहास सकल जग जानी।'' (यह इतिहास सारा संसार जानता है)

''ब्रम्हागिरा भै गगन गभीरा'' (आकाश से गंभीर ब्रम्हावाणी हुई)

''उमा–महेस बिबाह बाराती। ते जलचर अगनित बहुभांति।''

(पार्वती और शिव बाराती नदी के असंख्य प्रकार के जलचर के समान है)

''असुर नाग खग नर मुनि देवा। आइ करहिं रघुनायक सेवा।।
जन्म महोत्सब रचहिं सुजाना। करहिं राम कल कीरति गाना।।''

(असुर, नाग, पक्षी, मनुष्य, मुनि और देवता सब अयोध्या में आकर रघुनाथ की सेवा करते हैं)

रामचरितमानस में आंगिक–कायिक और अमौखिक संचार : इसे इन उदाहरणों से समझाा जा सकता है ''संभु समय तेहि रामहि देखा उपजा हियँ अति हरषु बिसेशा''।

(शिव जी ने उसी अवसर पर श्रीराम को देखा और उनके हदय में बहुत भारी आनंद उत्पन्न हुआ)

''जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू''63 (पहले प्रभु ने हाथ जोड़कर सती को प्रणाम किया)

''जाइ संभू पद बंदनु कीन्हा सनमुख संकर आसनु दीन्हा''

(उन्होंने जाकर शिवजी के चरणों में जाकर प्रणाम किया और शिवजी ने उनको बैठने के लिए आसन दिया जैसे – ''भगिनीं मिली बहुत मुसुकाता'' (बहिनें बहुत मुस्कुरी हुई मिली)

''बारहिं बार लेति उर लाई गदगद कंठ न कछु कही जाई''

(फिर बार–बार उसे हदय से लगाने लगीं और प्रेम से मैना का गला भर आया, कुछ कहा नहीं जाता)

''सुनी कठोर बानी कपि केरी, कहत दसानन नयन तरेरी''

(वानर की कठोर वाणी सुनकर रावण आँखे तरेर कर बोला)

''जोरि पानि कह तब हनुमंता।''

(तब हुनमान हाथ जोड़कर बोले)

निष्कर्ष

मनवीय जीवन संचार पर आधारित है जिसके बिना सामाजिक जीवन असंभव होता है। रामचरितमानस में संचार के विभिन्न प्रकार यथा अंतरावैयक्तियक संचार, अंतरवैयक्तियक संचार, समूह संचार, जनसंचार, आंगिक–कायिक संचार, रस

संचार और प्रतीक संचार का संदर्भ प्राप्त होता है। रामचरितमानस के कथायों के माध्यम से संचार के प्रकार और संचार के माध्यमों के संदर्भों का होना यह प्रमाणित करता है कि रामचरितमानस में आधुनिक संचार प्रक्रिया को समझा जा सकता है।

संदर्भ

1. त्रिपाठी, डॉ. विश्वनाथ (1999), लोकवादी तुलसीदास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0– 20
2. बुल्के, डॉ. कामिल (1966) मंथन, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 28
3. शुक्ल, रामचंद्र (2014), गोस्वामी तुलसीदास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृ0सं0– 75
4. Faure, Jean Paul & Andre, Number (1979), Color and Indet Communication, A.B.C. Valag, Zurich Pg. 81
5. सिंह, ओ.पी. (2018), संचार के मूल सिद्धान्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0सं0– 19
6. Roger, E.M & Floged, Shoemaker, (1971), Communication of Innovation: A cross cultural approach. The Free Press, New York, Pg. 23

7- Loyed C.L., (1976) Communication Assessment and nedt Communication, A.B.C. Velag, Zurich, Pg. 81

8. Allen, L.A. (1958), Management and Organization, New York: McGraw-Hill, Pg. 130
9. Lexicon Universal Encyclopedia, Vol.-111, Lexicon Publication, Ine, New York, N.Y.
10. सिंह, ओ.पी. (1993). संचार माध्यमों का प्रभाव. नई दिल्लीः क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, पृ0सं0– 57
11. मिश्र, सी. (2003). मीडिया लेखन सिद्धान्त और व्यवहार, दिल्लीः श्री सोमनाथ संजय प्रकाशन, पृ0सं0– 28
12. राजगढ़िया, वि. (2008), जनसंचार : सिद्धान्त और अनुप्रयोग, राधाकृष्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0– 28
13. Barker, Larry, L., (1978), communication, Prentice Hall Ine, Englewood, Cliffs, New Jersey, Pg. 196,
14. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर अयोध्याकाण्ड दोहा 188 चौपाई 1 पृ0सं0– 455
15. Watson, James & Anne Hill (2012) A Dictionary of Communication and Media Studies, Bloomsbury Publishing, New Delhi, Pg. 89

16. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड दोहा 60 चौपाई 4 पृ0सं0– 60
17. सिंह, ओमप्रकाश (1993) संचार माध्यमों का प्रभाव, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, पृ0सं0– 90
18. राजगढ़िया, विष्णु (2008), जनसंचार : सिद्धान्त और अनुप्रयोग, राधाकृष्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0– 31
19. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, दोहा 63 चौपाई 1 पृ0सं0– 62
20. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, दोहा 56 चौपाई 2 पृ0सं0– 57
21. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, दोहा 64 चौपाई 2 पृ0सं0– 63
22. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, दोहा 120 चौपाई 1 पृ0सं0– 109
23. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, किष्किनधा काण्ड, दोहा 5 चौपाई 6 पृ0सं0– 44
24. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा 39 चौपाई 4 पृ0सं0– 44
25. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, दोहा 52 चौपाई 4 पृ0सं0– 54
26. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, दोहा 59 चौपाई 2 पृ0सं0– 60
27. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, दोहा 62 चौपाई 1 पृ0सं0– 61
28. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, दोहा 71 चौपाई 4 पृ0सं0– 68
29. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, दोहा 280 पृ0सं0– 237
30. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, लंकाकाण्ड, दोहा 29 चौपाई 2, पृ0सं0– 725
31. गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, उत्तरकाण्ड, दोहा 3 चौपाई 3 पृ0सं0– 867